स्कूल में सीखने-सिखाने की ज़रूरत है पुस्तकालय

शिक्षक वरुण कुमार से पुरुषोत्तम ठाकुर की बातचीत



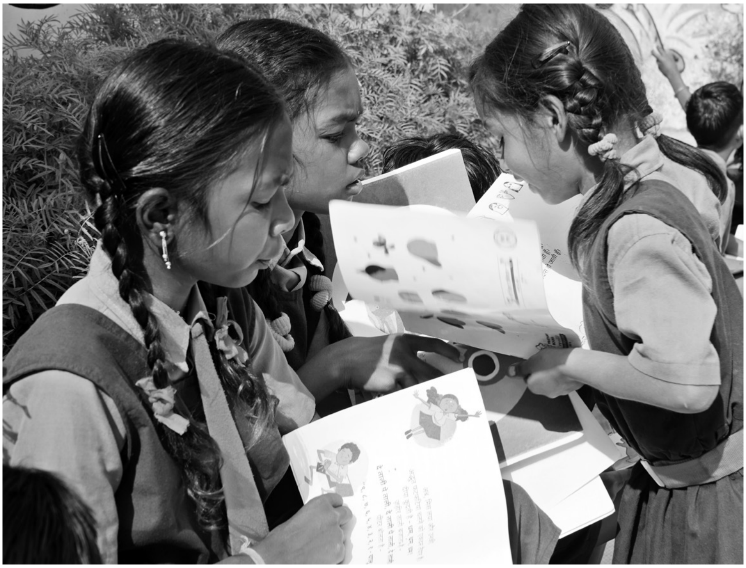
पुरुषोत्तम : आपका संक्षिप्त परिचय चाहूँगा।

वरुण : मेरा नाम वरुण कुमार साहू है। मैं सहायक शिक्षक के तौर पर शासकीय प्राथमिक शाला बेलतरा, संकुल केन्द्र सरम, विकासखण्ड धमतरी, ज़िला धमतरी में पदस्थ हूँ। मुझे स्कूल में काम करते हुए लगभग 2 दशक हो गए हैं।

पुरुषोत्तम : आपसे स्कूल के पुस्तकालय के सन्दर्भ में बात करना चाहूँगा। कृपया बताएँ, आपने अपने स्कूल में पुस्तकालय की शुरुआत कब की?

वरुण : हमारे स्कूल में पुस्तकालय की शुरुआत 2019 में हुई। जैसा कि अमूमन होता है, स्कूल में पुस्तकें तो थीं, लेकिन अलमारी में बन्द। मैंने अलमारी खोलकर कुछ पुस्तकें टटोलीं, और पाया कि उनमें अच्छी पुस्तकें थीं। मुझे लगा कि सभी पुस्तकों को निकालकर इस्तेमाल में लेना चाहिए। साथी शिक्षकों से भी इस सन्दर्भ में बात की। और तब इन पुस्तकों को एक कक्ष में व्यवस्थित तरीक़े से रखने–सजाने का काम हुआ। इसके बाद सबसे महत्त्वपूर्ण काम था बच्चों को इसमें जोड़ना। पुस्तकालय कक्ष, जिसको हम अब मुस्कान पुस्तकालय कहते हैं, में बच्चे जाने भी लगे, लेकिन वहाँ उन्हें पढ़ने–लिखने के लिए बहुत कम समय मिल पाता था।

हम सभी जानते हैं कि अकसर स्कूल में फ़ोकस पाठ्यपुस्तकों पर ही रहता है, और हमारे स्कूल में भी ऐसा ही था। लेकिन हमें यह भी लगता था कि बच्चे दूसरी पुस्तकें पढ़ पाएँ, इसके लिए भी कुछ समय देना चाहिए। इसलिए हमने समय सारणी में इसकी जगह बनाई, और 30–40 मिनट का एक पुस्तकालय कालखण्ड शुरू किया। कुछ ही समय में हमने पाया कि इन 30–40 मिनटों में बच्चे कुछ ख़ास नहीं पढ़



तब पुस्तकों को अलग–अलग स्तर में बाँटकर उनको कक्षाओं में पहुँचा दिया। हमारा सोचना था, यदि पुस्तकें बच्चों की पहुँच में रहेंगी, तब उन्हें देखने की इच्छा भी होगी और वे किताबों के पन्नों को उलटेंगे–पलटेंगे भी, और ऐसा हुआ भी। धीरे–धीरे बच्चे किताबों से जुड़ने लगे।

अब कई बार ऐसा होता है, जब हम कोई ऐसा सवाल देते हैं जिसमें बच्चों को किताबों को देखने की ज़रूरत हो सकती है या कभी शिक्षकों के लिए अचानक कोई काम आ जाता है, तब बच्चे कक्षा में रखी पुस्तकों का इस्तेमाल कर लेते हैं। बच्चे अपनी पसन्द की पुस्तकें उठाते हैं। जो बच्चे ख़ुद पढ़ सकते हैं वो ख़ुद, और बाक़ी अपने साथियों की मदद से पढ़ते हैं। पढ़ने के बाद वे पढ़ी गई पुस्तकों के बारे में चर्चाएँ भी करते हैं। कक्षा में ही नहीं, बल्कि स्कूल में ख़ाली कालखण्ड में भी वे एक दूसरे को कहानी सुना रहे होते हैं, या किसी पात्र पर चर्चा कर रहे होते हैं। बच्चे यह भी बताते हैं कि किसने कौन–सी किताब पढ़ी; उस किताब में क्या था; किसने लिखी है; कौन–सा चित्र पसन्द आया; आदि।

पाते थे। ऐसा शायद इसलिए भी था, क्योंकि पुस्तकालय और पुस्तकों में उनकी दिलचस्पी भी कम थी।

फिर हमने अपने प्रयासों को और व्यवस्थित व कुछ नया भी करने का सोचा। बच्चों में पुस्तकों के प्रति दिलचस्पी पैदा करने के लिए हमने सबसे पहले उन पुस्तकों को छाँटा जो हमें लगा कि उन्हें रोचक व मज़ेदार लगेंगी। इन्हें छाँटने का एक मानदण्ड यह था, क्या पुस्तकें हमें भी अच्छी लग रही हैं? जब हम पुस्तकें देख रहे थे, हमें भी कई पुस्तकें काफ़ी अच्छी लगीं। फिर हमने इन पुस्तकों को कक्षा के स्तर के अनुसार बाँटा, और कक्षा 1 से 5 तक हर कक्षा में पुस्तकें रखी गईं। मुझे लगता है, अलग–अलग स्तर के बच्चों के लिए अलग–अलग स्तर की पुस्तकों का रहना ज़रूरी है। चूँकि कक्षा पाँच के स्तर के बच्चे अनुच्छेद या कहानी पढ़ सकते हैं, इसलिए इस स्तर पर ज़्यादा पुस्तकें ऐसी रखीं जिनमें थोड़ी बड़ी कहानियाँ–कविताएँ थीं। हमारा मानना था, यदि इन बच्चों के लिए सिर्फ़ चित्रात्मक पुस्तकें ही रखते हैं, तब बच्चों के लिए वह कुछ ख़ास रुचिकर नहीं होंगी। एकबारगी वे उन्हें देख सकते हैं, लेकिन फिर उन्हें लग सकता है कि वे यह पुस्तकें क्यों पढ़ें। इनमें बस एक–एक लाइन लिखी है।

इसीलिए अब हमारे यहाँ पुस्तकालय के लिए कोई विशेष कालखण्ड की व्यवस्था नहीं है। जब भी बच्चों को समय मिलता है, ख़ाली होते हैं, उन्हें पुस्तकालय का इस्तेमाल करने की आज़ादी है। बच्चे किताबें घर भी ले जा सकते हैं।

पुरुषोत्तम : घर ले जाने के लिए किताबें जारी कैसे होती हैं?

वरुण : हमारे यहाँ पुस्तकें जारी करने के लिए यह व्यवस्था है कि बच्चे अपनी पसन्द

की पुस्तकें उठा सकते हैं। उसके लिए किसी प्रकार की मनाही नहीं है। बच्चे अपनी पसन्द की पुस्तक लेने के बाद उसे घर ले जा सकते हैं और वहाँ भी उसको पढ़ सकते हैं। पढ़ने के बाद बच्चे उन पुस्तकों के अनुभव लिखते हैं, और उनकी पसन्दीदा पुस्तक के बारे में बताते भी हैं।

पुरुषोत्तम : कक्षा में किताबें रखने से बच्चों का किताबों से जुड़ाव बना, यह आपने बताया। लेकिन उनको पढ़ने का चस्का लगे, इसके लिए आपने क्या किया?

वरुण : शुरुआत में, मैं सभी बच्चों को अपने हाथ से पुस्तक देता था। एक पुस्तक मैं ख़ुद लेकर उनके साथ बैठता था, और हम सभी मिलकर पढ़ते थे। मिलकर यानी, मैं अपनी उस पुस्तक को पढ़ता था और बच्चे अपनी पुस्तक में उसे देखते जाते थे। पढ़ने के बाद उस पुस्तक में क्या बातें कही गई हैं, उनपर बातचीत होती है। कुछ बातें वे बताते, कुछ मैं भी। लगभग डेढ़ महीने तक लगातार मेरा यह प्रयास जारी था। कई तरह की पुस्तकें इस दौरान पढ़ी गईं। बच्चे के परिवेश से, विज्ञान से जुड़ी हुईं पुस्तकें, कहानियाँ, आदि। कभी–कभी बच्चे पुस्तकें चुन लेते थे, उनके पृष्ठ देखकर उनको उलटा–पलटा कर बैठ जाते थे, इसलिए मैंने उनको भी पढ़ना शुरू किया। ऐसा करके बच्चों में रुचि बनने लगी। फिर बच्चों ने ख़ुद–से पुस्तक चुनना शुरू किया, और वे उन्हें घर भी ले जाने लगे। यहाँ मैंने हर कक्षा के लिए निर्धारित किया कि कुछ बच्चे सोमवार को, और कुछ बच्चे अगले दिन पुस्तकें घर ले जाएँ। ऐसा इसलिए कि हम उन पुस्तकों पर बात कर पाएँ। बच्चे पुस्तकें पढ़कर आते हैं। प्रार्थना सभा के बाद जब वे गोल घेरे में बैठते हैं वहाँ वो बच्चा, जो पुस्तक घर ले गया था, उसे बीच में रखकर बाक़ी बच्चों को उसके बारे में बताता है। बच्चे उसमें सवाल भी करते हैं। ऐसे कुछ प्रयास बच्चों की किताबों में रुचि विकसित करने के लिए किए गए हैं और अभी जारी हैं।



पुरुषोत्तम : पुस्तकालय की किताबों को पढ़ना क्या कक्षा में विषय शिक्षण के दौरान मदद करता है?

वरुण : अपने शिक्षण कार्यों के दौरान मैंने पाया है कि भाषा शिक्षण में पुस्तकालय काफ़ी मदद करता है। पढ़ने में, लिखना सीखने, अपने अनुभवों को व्यक्त करने, आदि में कई तरह से। कई सारी पुस्तकें ऐसी हैं जिनको मैंने नहीं पढ़ा, पर बच्चों ने पढ़ लिया है। कभी मैं उस पुस्तक पर बात करता हूँ, बच्चे कहते हैं कि उन्होंने उसे पढ़ लिया है। वे बता भी देते हैं कि क्या पढ़ा है। मैं उन्हें उनके अनुभव दर्ज करने के लिए ए–4 साइज़ के चार पेजों की एक पुस्तिका बनाकर दे देता हूँ। उसमें बच्चे पढ़ी गई पुस्तक के अनुभव दर्ज करते हैं। कौन–सी पुस्तक उन्हें अच्छी लगी; उसमें ऐसी क्या बातें हैं जो वो सबको बताना चाहते हैं; आदि। इस तरह से हमारे पास उस पुस्तक से जुड़े अनुभव जमा होते जाते हैं। नए बच्चों के लिए इन्हें पढ़ना एक नया अनुभव होता है। इस तरह सीखने के लिए हमारा बाल पुस्तकालय



वरुण : मेरे यहाँ वर्तमान में लगभग 650 पुस्तकें हैं। इनमें से कुछ शासन स्तर से मिली हैं, और कुछ छोटी पुस्तकें हैं जो समाचार–पत्रों के साथ आती हैं। मसलन, *बाल भास्कर*, आदि। कुछ पुस्तकें स्कूल में पहले से ही रखी हुई थीं। उन पुस्तकों को हमने ठीक किया और अब इस्तेमाल में ला रहे हैं। कभी बच्चे और शिक्षक भी कुछ पुस्तकें घर से ले आते हैं। जैसे– मेरे पास की कुछ छोटी–छोटी बाल कहानी की पुस्तकें और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से भी *संदर्भ* और *चकमक* जैसी कुछ पुस्तकें मिली हैं। इस तरह से हमने अपना पुस्तकालय बनाया है, और यह अभी भी बन रहा है।

पुरुषोत्तम : ये बताइए कि पुस्तकालय का विद्यालय में क्या योगदान है?

वरुण : पुस्तकालय बच्चों को रचनात्मक रूप से सोचने में काफ़ी मदद करता है। पाठ्यपुस्तकों से वो सारी चीज़ें पूरी नहीं हो पातीं जो एक पुस्तकालय कर सकता है। पुस्तकालय बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाता है, उनको नई–नई चीज़ों के बारे में जानकारियाँ मिलती हैं, और यह एक तरह से बच्चों को सीखने में आत्मनिर्भर बनाता है। बच्चे जब आत्मनिर्भर होने लगते हैं, यह जानने लगते हैं कि वे भी कुछ जानते हैं, तब वे खुलकर बोलने भी लगते हैं। मेरा मानना है कि यदि विद्यालय में पुस्तकालय नियमित रूप से संचालित होते हैं, बच्चे वहाँ जाते हैं, और पढ़ते हैं, यदि शिक्षक भी वहाँ जाते हैं, मैं मानूँगा कि वो विद्यालय जीवन्त है। दूसरे शब्दों में, विद्यालय को जीवन्त रखने के लिए पुस्तकालय या पुस्तक का कोना होना आवश्यक है, क्योंकि एक ही तरह की पुस्तकें पढ़कर बच्चे बोर हो जाते हैं। बच्चों को नवीनता चाहिए, और इस नवीनता की भरपाई पुस्तकालय बख़ूबी

बहुत अच्छा काम कर रहा है। हम इसको और बेहतर बनाने के प्रयास कर रहे हैं। हमने स्कूल की प्रधान पाठिका मैडम से पुस्तकालय को और बेहतर बनाने की कार्ययोजना पर बात की है। हम सारी पुस्तकों को क्रम से दीवार में एक पट्टी और खण्ड बनाकर उन्हें प्रदर्शित करें, ताकि हर पुस्तक बच्चे की नज़र के सामने हो और वो चाहे तो आसानी से उसे ले सके। हमारी योजना है कि पुस्तकालय बेहतर तरीक़े से काम करे, और पुस्तकों को भी संरक्षित रखा जाए। प्रशिक्षणों में मैंने कई शिक्षकों को यह कहते सुना है कि पुस्तकें फट जाती हैं। मेरे यहाँ भी स्थिति ऐसी ही है। हमारे पुस्तकालय में सफ़ेद वाला मोटा टेप, गम, कैंची, स्टेपलर जैसी चीज़ें रहती हैं, और सप्ताह में एक दिन पुस्तकों को सुधारने के लिए निश्चित है। उस दिन हम उन सारी पुस्तकों की मरम्मत करते हैं जिनका जिल्द निकल गया हो, या कवर पेज निकला हो, या कुछ पेज फट गए हों। इस तरह वो पुस्तक बच्चों के इस्तेमाल के लिए फिर से नई हो जाती है। वैसे भी अलमारी में दीमकों द्वारा खाए जाने से ज़्यादा बेहतर यही है कि ये बच्चों के द्वारा इस्तेमाल में ख़राब हों! कुछ किताबें रैक में और कुछ कक्षा में हैं। जैसा कि मैंने पहले कहा हमने सभी किताबों को स्तरवार बाँट दिया है और काम कर रहे हैं।

पुरुषोत्तम : आपके पुस्तकालय में कितनी, और किस तरह की पुस्तकें हैं, और आपने इन्हें कैसे इकट्ठा किया है?

करता है। एक पुस्तकालय में कई तरह की पुस्तकें होती हैं, बहुत सारे लेखन होते हैं, और कई सारे लेखकों के अनुभव रहते हैं। उन सभी लेखकों, कहानीकारों, कवियों–कवित्रियों का अनुभव बच्चों को मिलता है। मैं मानता हूँ कि सीखने और बच्चों को एक ऊँची उड़ान देने के लिए विद्यालय में पुस्तकालय का होना ज़रूरी है।

पुरुषोत्तम : आपके पुस्तकालय में कमी क्या है?

वरुण : जैसा मैंने कहा, अभी ज़्यादातर पुस्तकें कक्षा में ही हैं। यदि व्यवस्था के तौर पर देखा जाए, मैं चाहता हूँ कि मेरे विद्यालय में पुस्तकालय के लिए एक अलग से कमरा हो। अलग से स्वतंत्र कक्ष होने से हम ज़्यादा किताबें रख सकते हैं, और उनकी देखरेख व सार–सँभाल आसान हो जाती है। इसमें हम डिजिटल लाइब्रेरी भी स्थापित कर सकते हैं। आजकल मैंने देखा है कि यूट्यूब वग़ैरह कुछ सोशल मीडिया में डिजिटल लाइब्रेरी भी हैं, उनमें भी कई पुस्तकें होती हैं। अगर एक अलग कमरा, पुस्तकों को व्यवस्थित और सुसज्जित करने के लिए रैक, आदि मिल जाएँ, तो अभी जिन पुस्तकों को हम टेबल पर सजाकर रखते हैं उन्हें क्रम से जमाकर रख सकते हैं। आने वाले सत्र में यदि कुछ राशि आती है या कहीं और से कोई मदद मिलती है, तब हम पुस्तकालय को बेहतर करने का काम करेंगे।

पुरुषोत्तम : अपने स्कूल पुस्तकालय और उसकी प्रक्रियाओं के बारे में बताने के लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

सभी चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

वरुण कुमार साहू तक़रीबन दो दशक से प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। उन्हें आदिवासी अंचल के स्कूलों में भी शिक्षण का लम्बा अनुभव है। वर्तमान में प्राथमिक शाला बेलतरा, ज़िला धमतरी, छत्तीसगढ़ में शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के साथ नवाचारी तरीक़े से काम करना बहुत अच्छा लगता है।

सम्पर्क : varunkumarsahu77@gmail.com

पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर, 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। फ़िलहाल छत्तीसगढ़ के रायपुर संस्थान में कार्यरत हैं। फ़ाउण्डेशन से जुड़ने से पहले पुरुषोत्तम का पत्रकारिता में 20 साल का अनुभव है, जिसमें 7 साल एनडीटीवी के राज्य प्रतिनिधि के बतौर भुवनेश्वर में कार्य किया है। अभी भी वह PARI और Down to Earth जैसी पत्रिकाओं में शिक्षा और ग्रामीण भारत की कहानियाँ लिखते हैं।

सम्पर्क : purusottam.thakur@azimpremjifoundation.org